xk/kh o/pkfjdh

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

xk/kh o/kkfjdh

Mk- xkjo f=ikBh] Mk- ehuk{kh 'kekZ

नमूना • SAMPLE

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

}kjk izdkf'kr

AKHAND

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल–9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

xk/kh o|pkfjdh

संस्करण : 2019
© सम्पादक
ISBN: 978-93-88998-56-7

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

Hkkjr e izdkf'kr

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा वी.एम. ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली से मुद्रित।

SAMPLE

lei.k

हमारे प्रेरणा स्रोत प्रातः स्मरणीय

एवं

पूजनीय **Jh jk/ks';ke f=ikBh** *एवं पूजनीया*

स्व. **Jherh 'kkfUr f=ikBh**

को सादर।

नमूना SAMPLE

नमूना • SAMPLE

Hkfedk

गांधी के विचारों का अध्ययन स्वयं ही संपूर्ण मानवता का अध्ययन है। गांधी लगभग सौ सालों से दुनिया भर के तमाम विचारों को दशा और दिशा देते आए हैं। गांधी के विचारों पर बहुत कुछ लिखा गया, अनगिनत शोध हुए लेकिन उनके विचार हमेशा ही आम व्यक्ति से लेकर दुनिया भर के विद्वानों को प्रभावित करते रहे हैं। मुझे यह लिखते हुए हर्ष हो रहा है कि 'गांधी वैचारिकी' नामक यह शोधपरक संचयिता उसी वैचारिकी प्रभाव के श्रृंखला की एक कड़ी है।

गांधी पूरी निष्ठा से स्वीकार करते थे कि उन्होंने अनेक धर्मों और संस्कृतियों से सीखा है और उसे ही अपने विचारों में समाहित किया है। उन्होंने कभी भी अपने विचारों पर अधिकार नहीं जताया। गांधी ने अनेक धर्म और संस्कृतियों में प्रचलित विचारों को देश, काल और परिस्थितियों के अनुसार संदर्भित किया और यही उनके विचार बने। शायद विचारों को समायोजित करने की ये अद्‌भुत क्षमता ही गांधी को महात्मा बनाती हैं।

आज हमारी धरती युद्ध और उन्माद की विभीषिका पर खड़ी है. दुनिया की 30 प्रतिशत आय हथियारों के निर्माण और खरीद में खर्च की जा रही है, दुखद रूप से एशिया भी इसमें शामिल है, जो न सिर्फ गांधी की धरती है बल्कि बुद्ध–जैन जैसे अनेक शांतिप्रिय धर्मों की उद्‌भव स्थली भी है। हमारे पास हमारी संस्कृति में ज्ञान का भंडार है लेकिन हम उस पर ध्यान नहीं देते या यूं कहें कि हम उसकी पैकेजिंग नहीं कर पाते। इसी कारण गांधी को पढ़ना और व्याख्यायित करना बहुत जरूरी हो जाता है।

SAMPLE

शायद बहुत कम लोगों को ये जानकारी होगी कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने परमाणु हथियारों को गैर कानूनी घोषित कर दिया है और प्रत्येक व्यक्ति के लिए शांति के अधिकार को भी सहमति दी है। लेकिन दुखद रूप से किसी भी मीडिया ने इस पर कोई चर्चा नहीं की, दरअसल हम सेना और हथियार से इतर कुछ सोचना ही नहीं चाहते, हम अहिंसा और शांति के बारे में नहीं सोच पाते। हम नहीं सोच पाते कि हमारे जीवन के लिए शांति का अधिकार भी उतना ही आवश्यक है जितना हवा और पानी।

पूरी दुनियां में फैले उन्माद को देख कर लगता है कि गांधी कहीं खो गए या अप्रासंगिक हो गए लेकिन गांधी न तो खोते हैं न ही अप्रासंगिक होते है। हम सबके भीतर एक छोटा सा गांधी है जो रोज इस उन्माद से लड़ता है। हमारे अंदर बैठा गांधी ही हमें एक दिन एहसास दिलाएगा कि घृणा, हिंसा और युद्ध की प्राप्ति हमेशा शून्य होती है। गांधी के विचार समष्टिगत विचार थे। उन्होंने कभी भी केवल किसी एक विचार पर चर्चा नहीं की, उन्होंने सत्य अहिंसा, स्वदेशी, स्वराज और सर्वोदय पर समष्टिगत रूप से न केवल चिंतन किया बल्कि प्रयोग भी किया।

गांधी वैचारिकी की सबसे पहली और महत्वपूर्ण कड़ी सत्य है। गांधी का मानना था कि सत्य हमेशा सापेक्षिक होता है, विभिन्न परिस्थितियों का सत्य अलग होता है, आवश्यक नही कि एक व्यक्ति का सत्य, दूसरे व्यक्ति का भी सत्य हो। सत्य के भी अनके स्वरूप होते है, सत्य पर किसी का एकाधिकार नहीं हो सकता, कोई भी यह नहीं बता सकता कि किसी का सत्य और नैतिकता क्या होना चाहिए यदि मैं किसी को बताता हूँ कि उसे क्या करना चाहिए तो इसका सीधा अर्थ है कि मैं उसे गुमराह कर रहा हूँ।

वास्तव में गांधी यही है जिन्होंने पूरी दुनिया के वैचारिकी को समृद्ध किया लेकिन कभी भी उस पर अधिकार नहीं जताया। दरअसल गांधी के विचारों की महत्ता ये नहीं कि उन्होंने लोगों को ज्ञान दिया बल्कि

उनके विचार महत्वपूर्ण इसलिए हैं क्योंकि उन्होंने व्यक्तिगत जीवन में इसका प्रयोग किया। दरअसल गांधी के विचार मात्र विचार नहीं बल्कि प्रयोग है जिसे मनसा, वाचा एवं कर्मणा धारण किया जा सकता है।

गांधी के विचार कभी भी आपको किसी खास किस्म की नैतिकता में नही बांधते वो हमेशा जीवन जीने और सही गलत को समझने के लिए एक विकल्प देते है। आश्चर्यजनक रूप से गांधी के विचार कभी–कभी ऐसे लोगों से भी समानता रखते है जिनसे वैचारिक रूप से वो बिल्कुल अलग है। कार्ल मार्क्स को पढ़ते हुए मुझे एक रोचक प्रसंग मिला जो आप सबके साथ साझा करना चाहूंगी, एक बार मार्क्स से एक विद्यार्थी ने पूछा कि हमे एक ऐसी चीज बताइए जो सीखनी चाहिए, मार्क्स ने उत्तर दिया कि अपने अंदर के सबसे सरल सत्य को खोजो। गांधी ने यही किया, अपने अंदर के सबसे सरल सत्य को खोजा। यही वो सरल सत्य था जिसके अंतर्गत गांधी जी ने सर्वोदय की बात कहीं, सर्वोदय से तात्पर्य है प्रत्येक का विकास और यहीं गांधी के शांति की व्याख्या है।

दरअसल गांधी का शांति पर विचार कोई उपलब्धि नहीं बल्कि एक सतत प्रक्रिया है। आश्चर्यजनक रूप से संयुक्त राष्ट्र संघ भी गांधी के इन्हीं विचारधाराओं से संचालित हो रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा हाल ही में दी गई सतत शांति (सस्टेनिंग पीस) की अवधारणा कुछ और नहीं बल्कि गांधी के ही विचार है, जो जय जगत के अवधारणा से काफी हद तक प्रभावित है। आमतौर पर इस सामरिक स्थिरता, युद्ध का न होना या निःशस्त्रीकरण को ही शांति मान लेते है जबकि विकास, समृद्धि, संस्कृति, जेंडर, न्याय, शिक्षा एवं स्वास्थ्य तक आम लोगों की पहुंच ही वास्तविक शांति है। दरअसल यही गांधी की शांति की अवधारणा है'। अगर गौर करें तो संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा दिए गए सोलह सतत विकास के लक्ष्य (सस्टेनेबल डेवेलपमेंट गोल) ही समष्टिगत रूप में गांधी दर्शन पर आधारित शांति को प्राप्त करने का माध्यम है।

नागरिक और नागरिकता सम्बन्धी कोई भी पहलू या पक्ष गांधी से प्रभावित हुए बिना या गांधी को सन्दर्भित किए बिना पूरा नहीं होता। हम

सब जानते हैं कि हिंसा की अनुपस्थिति शान्ति की प्रामाणिकता तय नहीं करती। शान्ति को शान्तिपूर्ण माध्यमों से स्थापित करने का रास्ता गांधी ने ही पूरी दुनियां को दिखाया, यही गांधी की सबसे बड़ी देन है। उनका स्पष्ट मानना था कि यदि कोई ये समझता है कि वो हिंसक या अशान्तिपूर्ण माध्यमों से शान्ति स्थापित कर सकता है तो वह भ्रम में जी रहा है। स्थाई शान्ति, शान्तिपूर्ण माध्यमों से ही स्थापित की जा सकती है।

सांस्कृतिक हिंसा भी हमारे समाज का दुर्भाग्यपूर्ण सत्य है, जब हम किसी हिंसा को हिंसा के तौर पर स्वीकार नहीं कर पाते तो वो सांस्कृतिक हिंसा होती है। इसके अन्तर्गत सबसे ज्यादा मानव गरिमा का हनन होता है। गुणात्मक शान्ति वही है जिसमें मानव गरिमा का पूरा सम्मान किया जाए। गांधी ने इन्हीं सन्दर्भो को पहचाना और माना कि हिंसा तभी ज्यादा होती है जब हम मानते ही नहीं कि हमने हिंसा की।

गांधी मानव या समाज के किसी विशेष पक्ष या सन्दर्भ पर विचार नहीं रखते बल्कि मानव समाज और प्रकृति के अन्तर्सम्बन्धों को उजागर करते है। गांधी कहते है कि हमने हिंसा से जो कुछ भी अर्जित किया है उस पर अपनी पीठ थपथपाते है लेकिन जब हम ये समझ लेंगे कि हमने अहिंसक माध्यमों से मानव सभ्यता को किस तरह गढ़ा तो हमें खुद पर गर्व होगा। अक्सर गांधी को आदर्शवादी या यूटोपियन कहकर हम खारिज कर देते हैं लेकिन गांधी ने कभी ऐसी कोई बात नहीं कही जिसका सामान्य जीवन में प्रयोग न किया जा सके। गांधी को समझने का सबसे आसान तरीका है कि हम वो पढ़े जो गांधी कहते है।

जिस तरह गांधी कोई प्राप्ति नहीं बल्कि प्रक्रिया हैं उसी तरह गांधी के विचारों का भी कोई गत्तव्य नहीं है बल्कि इसे तो निरन्तर पढ़ने समझने और व्याख्यापित करने की आवश्यकता है। यह संचयिता इसी दिशा में एक बेहतर प्रयास है जिसमें समकालीन परिस्थितियों में गांधी के विचारों को आधुनिक मापदण्डों और नए नजरिए से संकलित किया

गया है। मैं डॉ. गौरव त्रिपाठी एवं डॉ. मीनाक्षी शर्मा को शुभकामनायें देती हूँ साथ ही उन सभी लेखकों को भी शुभकामनायें देती हूँ जिनके प्रयास से यह संकल्पना अपना पूर्ण रूप प्राप्त कर रही है।

गुरूपूर्णिमा — **ik- geyrk feJk**

26 जूलाई 2019 — एम. ए. (राजनीति विज्ञान), पी–एच.डी.

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

vkHkkj Kkiu

आज जब भारत के समाचार पत्रों में गोडसे के दर्शन एवं कार्यकलापों का मीमांसा किया जा रहा हो तब 'गांधी वैचारिकी' संज्ञक पुस्तक का संपादन करना हमारे लिये सौभाग्य की बात है। आज गांधी जी की 150वीं वर्षगांठ के अवसर पर उनके विचारों एवं आंदोलनों की मीमांसा करना उचित समझ पड़ता है। गांधी जी को पारलौकिक यात्रा पर गये हुए 71 वर्ष हो गये किंतु इस वसुधा पर कभी ऐसा नही महसूस हुआ कि हम लोगों के सम्मुख गांधी जी नही हैं।

गांधी जी कोई कायिक सत्ता मात्र नहीं थे, अपितु उनकी वैचारिक सत्ता अस्तित्ववान है। गांधी जी समाज के सभी वर्गों के विकास की चिंता करते थे। दलितो एवं स्त्रियों के विकास हेतु गांधी जी ने महती भूमिका अदा किया। गांधी जी ने आदिवासियों को 'कालिपराज' एवं 'उजलीपराज' की संज्ञा दिया तथा उनके उत्थान के लिए स्वयंसेवकों को तैयार किया। गांधी जी ने स्त्रियों को सहनशीलता की प्रतिमूर्ति माना तथा उन्हें दक्षिण अफ्रीका एवं भारत दोनों जगहों पर राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भागीदारी हेतु प्रोत्साहित किया। गांधी जी के प्रभाव के कारण ही नमक सत्याग्रह, स्वदेशी आंदोलन में महिलाओं ने महती भूमिका का निर्वहन किया। गांधी जी का मानना था कि निर्बलों का सहारा राम ही है। वे नैतिकता को सर्वोपरि मानते थे। उनका मत था कि यह संसार नीति पर टिका है। नीतिमात्र का समावेश सत्य पर टिका है। गांधी जी कहते थे कि स्तुति, प्रार्थना, उपासना कोई वहम नही है। यह एक सच है। इसका मूल कंठ न होकर हृदय है।

SAMPLE

गांधी जी ने 10 जून 1891 को वैरिस्टर की उपाधि प्राप्त किया तथा कालांतर में दक्षिण अफ्रीका दादा अब्दुल्ला के मुकदमे की पैरवी हेतु गये। वहाँ तैय्यब सेठ से मिलकर मुकदमे में सुलह करवा दिया। उनका मत था कि वकील का दायित्व दोनो पक्षों के बीच की खाई को पाटना है।

गांधी जी ने भारत के लोगों को सविनय अवज्ञा करना सिखलाया। गांधी जी ने चंपारण में ब्रिटिश हुकूमत के आदेश को मानने से इंकार कर देशवासियों को अचंभित कर दिया। वे सत्याग्रह के माध्यम से ही शोषक के हृदय परिवर्तन का प्रयास करते थे जिसका उदाहरण मिल मजदूरों के वोनस आंदोलन में द्रष्टव्य है।

गांधी जी आज वर्तमान समय में भी प्रासंगिक बने हुये हैं। जब भारत के प्रधानमंत्री माननीय मोदी जी लालकिले से स्वच्छता का आह्वान करते है तब गांधी जी स्वयमेव ही प्रासंगिक हो जाते हैं। गांधी जी गुलामी के दौर में बंबई में जब प्लेग का प्रकोप फैला तो स्वयं लोगों से स्वच्छता का आह्वान किया। लोगों के पाखानों का निरीक्षण किया तथा भंगी बस्तियों में घूम–घूम कर घरों के अन्दर की सफाई का जायजा लिया। गांधी जी नदियों की स्वच्छता का विशेष खयाल रखते थे यही कारण है कि वे साबरमती नदी में प्रदूषित जल मिलने नहीं देते थे। गांधी जी ने रूढ़ियों के प्रति कठोरता दिखाया तथा इसे लोगों का पागलपन करार दिया। जब विश्व परमाणु हथियारों की होड़ में लगा हो तब गांधी जी का अहिंसात्मक दर्शन प्रासंगिक हो उठता है।

आज इस पुस्तक के प्रकाशन के अवसर पर हम उन सभी योगदानकर्ताओं के प्रति आभार व्यक्त करना अपना पुनीत कर्त्तव्य समझते हैं, जिनके कारण यह पुस्तक मूर्त रूप ले सकी है। तद्पोरान्त हम प्रो. डॉ. हेमलता मिश्रा जी के प्रति श्रद्धावनत् हैं जिन्होंने हमारे टेलीफोनिक आग्रह पर इस पुस्तक की भूमिका लिखकर ससमय उपलब्ध करवाया। इसके साथ ही साथ प्रो. डॉ. लालजी त्रिपाठी, पूर्व प्राचार्य मडियाहूं पी. जी. कॉलेज जौनपुर, प्रो. डॉ. वन्दना शर्मा, निर्देशक उच्च शिक्षा उ.प्र., प्रो. डॉ. अमित भारद्वाज, संयुक्त सचिव उच्च शिक्षा विभाग उ.प्र. शासन, डॉ. बी. एल. शर्मा, सहायक निर्देशक उच्च शिक्षा उ.प्र., प्रो. पी. एन.

डोगरे, प्राचार्य, के. एन. पी. जी. कॉलेज ज्ञानपुर, प्रो. डॉ. सविता भारद्वाज, प्राचार्य राजकीय महिला पी. जी. कॉलेज गाजीपुर, प्रो. डॉ. शील प्रिय त्रिपाठी, प्राचार्य राजकीय पी. जी. कॉलेज बिंदकी फतेहपुर, प्रो. डॉ. यशोधरा शर्मा, प्राचार्य राजकीय महाविद्यालय सेवापुरी के डॉ. लक्ष्मी यादव, डॉ. मो. तौफीक, डॉ. रीना सिंह, डॉ. तेज प्रकाश चतुर्वेदी, डॉ. प्रभात पांडेय, डॉ. विवेकानन्द, डॉ. के. के. उजाला, डॉ. रमोद मौर्य, डॉ. राज कुमार, डॉ. शिवाकांत त्रिपाठी, डॉ. भाष्कर शुक्ल, डॉ. महेंद्र त्रिपाठी, डॉ. विष्णु कांत त्रिपाठी, डॉ. आनंद सिंह, डॉ. श्रीप्रकाश मिश्र, डॉ. धीरेंद्र सिंह, डॉ. प्रियंका पटेल, डॉ. मिथिलेश सिंह, डॉ. संगीता सिन्हा, डॉ. आशुतोष त्रिपाठी, डॉ. वृजेश मिश्र, डॉ. जे. बी. सिंह, डॉ. अतुल कुमार पांडेय, डॉ. रीता सिंह, डॉ. मृत्युंजय सिंह, डॉ. अवधेश मिश्र, डॉ. विशाल श्रीवास्तव, डॉ. वृजेश श्रीवास्तव, डॉ. दिनेश कुमार राजपूत, डॉ. संजीव गुप्ता, डॉ. अरविन्द कुमार उपाध्याय, डॉ. उपेन्द्र सिंह, डॉ. के. के. गिरि, डॉ. विन्ध्याचल यादव, डॉ. शिव मंगल यादव, डॉ. सुजीत सिंह, डॉ. अतुल कुमार पाण्डेय, डॉ. दिग्विजय सिंह, एवं डॉ. भैया लाल के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिनके प्रत्यक्ष व परोक्ष सहयोग से यह पुनीत कार्य संभव हो सका।

इसी क्रम में इस पुस्तक के संपादक साथी डॉ. गौरव त्रिपाठी के पिता जी डॉ. कमला कांत त्रिपाठी, प्रिंसिपल इंटर कॉलेज तेजगढ़ के प्रति हम आभार ज्ञापित करते हैं जिन्होंने प्रूफ रीडिंग में हम लोगों को सहयोग प्रदान किया। अंत में हम अखंड पब्लिकेशन एवं डिस्ट्रीब्यूशन के स्वामी वीरेंद्र कुमार यादव के प्रति आभार व्यक्त करते है जिनके सहयोग से यह पुस्तक हम लोगों के हाथों में आ सकी है।

M,ñ xkjo f=ikBh] M,ñ ehuk{kh 'kekZ

नमूना • SAMPLE

;kxnku lph

1. **Mk- vut dekj feJk]** असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीतिशास्त्र विभाग, पी0पी0एन0 (पी0जी0) कॉलेज, कानपुर, उत्तर प्रदेश।
2. **Mk- dkyjke]** एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, राजकीय महाविद्यालय गभाना, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश।
3. **Mk- fLerk]** असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, आर्य कन्या पी0जी0 कालेज, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।
4. **lqj'k dekj flag]** असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीतिशास्त्र विभाग, राजकीय महाविद्यालय, गभाना, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश।
5. **M,- ,l ,u oek]** एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, राजकीय महाविद्यालय सेवापुरी, वाराणसी, उत्तर प्रदेश।
6. **M,- vut dekj çlg]** असिस्टेंट प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय औराई, भदोही, उत्तर प्रदेश।
7. **Mk- xtUnz Hkkj}kt]** हिंदी विभाग, शासकीय तिलक स्नातकोत्तर महाविद्यालय कटनी, मध्य प्रदेश।
8. **Mk- dk'kyUnz oek]** असिस्टेंट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय महू, इंदौर, मध्य प्रदेश।
9. **Mk- eDrk prqosnh]** असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, मान्यवर काशीराम राजकीय महाविद्यालय, गभाना, अलीगढ, उत्तर प्रदेश।

SAMPLE

10. **vkyksd dekj flag]** असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, महामाया गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज, महोना, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।

11. **Mk- verk flag]** असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीतिशास्त्र विभाग, विन्ध्यवासिनी डिग्री कॉलेज, मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश।

12. **Mk- ehuk{kh 'kekZ]** एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, गोकुल दास हिंदू गर्ल्स डिग्री कॉलेज, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश।

13. **lanhi dekj vkfnR;]** शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।

14. **Mk- Mh- vkj- 'kekZ]** प्रोफेसर, राजनीतिक विज्ञान विभाग, कॉलेज प्राचार्य, अलवर, राजस्थान।

15. **Mk- /khjt flag]** विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, मोहननगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश।

16. **Mk- egUnz f=ikBh]** असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर, भदोही, उत्तर प्रदेश।

17. **Hkkjr ek;ZA] vflLVsaV izkQslj]** चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय, भिवानी, हरियाणा।

18. **ik- iznhi dekj]** सहप्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष शोध केन्द्र एवं स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग, शासकीय श्रीमंत माधवराव सिंधिया स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शिवपुरी, मध्य प्रदेश।

19. **Mk- euh"kk flag]** असिस्टेंट प्रोफेसर/कार्यवाहक प्राचार्य, राजनीति शास्त्र विभाग, शिवदुलारी देवी दलडपट शाही महिला महाविद्यालय रामकोला, कुशीनगर, उत्तर प्रदेश।

20. **M,- fnfXot ; 'kekZ]** अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, उत्तर प्रदेश।

21. **nhfidk jkor]** असिस्टेंट प्रोफेसर, लाइब्रेरी, महामाया गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज, महोना, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।

SAMPLE

22. **Mk- u;t;gr QkRek]** असिस्टेंट प्रोफेसर, मध्यकालीन इतिहास विभाग, हमीदिया गर्ल्स डिग्री कॉलेज, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

23. **Mk jkt;ho nc]** असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, राठ महाविद्यालय पैठाणी, पौडी गढवाल, उत्तराखण्ड।

24. **Mk- i;Kk feJk]** असिस्टेंट प्रोफेसर, गणित विभाग, प० दीन दयाल उपाध्याय राजकीय स्नात्कोत्तर महिला महाविद्यालय, राजाजी पुरम, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।

25. **Mk- g;ekjke]** सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, श्री बी.आर. मिर्धा राजकीय महाविद्यालय, नागौर, राजस्थान।

26. **Mk- f'k[kk t;u]** सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, बी०एस०एम० पी०जी० कॉलेज, रुड़की, हरिद्वार, उत्तराखण्ड।

27. **Mk- iou d;ekj 'kek]** एम.ए., बी.एड्., पी–एच.डी.।

28. **Mk- jhuk]** असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, वैश्य कॉलेज, भिवानी, हरियाणा।

29. **?ku';ke d;'kokgk]** असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, राजकीय महाविद्यालय सेवापुरी, वाराणसी, उत्तर प्रदेश।

30. **M,- jf'e uk;d]** असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, सुधाकर महिला पीजी कॉलेज, पाण्डेयपुर, वाराणसी, उत्तर प्रदेश।

31. **Mk- _pk 'kDyk]** प्रवक्ता, राजनीति विज्ञान विभाग, ग्राम्यान्चल पी०जी० कॉलेज, हैदरगढ़, बाराबंकी, उत्तर प्रदेश।

32. **Mk- xkjo f=ikBh]** असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, श्रीमती इन्दिरा गांधी राजकीय पी.जी. कॉलेज, लालगन्ज, मीरजापुर, उत्तर प्रदेश।

33. **Mk- o;Unuk 'kek]** असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, राजकीय महाविद्यालय स्वार, रामपुर, उत्तर प्रदेश।

SAMPLE

नमूना • SAMPLE

fo"k; lph

	समर्पण	*v*
	भूमिका	*vii*
	आभार ज्ञापन	*xiii*
	योगदान सूची	*xvii*
1.	महात्मा गांधी : संक्षिप्त परिचय *–डॉ. स्मिता*	1
2.	महात्मा गाँधी का रामराज्य *–सुरेश कुमार सिंह, डॉ. कालूराम*	8
3.	गांधी की स्वदेशी मीमांसा *–डॉ. अनुज कुमार मिश्रा*	16
4.	समसामयिक परिप्रेक्ष्य में गाँधीवाद की प्रासंगिकता *–सुरेश कुमार सिंह*	30
5.	गांधी की हत्या का रोमांच *–डॉ. एस. एन. वर्मा, डॉ. अनुज कुमार सिंह*	38
6.	रंगे शिकस्त : सुबह–बहारे–नजारा है *–रुपा सिंह*	46
7.	हिन्दी के ललित–निबंध साहित्य पर महात्मा गाँधी के विचारों का प्रभाव *–डॉ. गजेन्द्र भारद्वाज*	58

SAMPLE

8. महात्मा गाँधी : धर्म एवं नैतिकता 67
–डॉ. कौशलेन्द्र वर्मा

9. गाँधी जी की अर्थनीति एवं उसकी वर्तमान मे प्रासंगिकता 76
–डॉ. मुक्ता चतुर्वेदी

10. गाँधी का मातृभाषा–दर्शन 85
–आलोक कुमार सिंह

11. स्त्री विमर्श एवं गांधीवाद एक समकालीन प्रसंग 96
–डॉ. अमृता सिंह

12. महात्मा गाँधी : सत्याग्रह का उदय 101
–डॉ. मीनाक्षी शर्मा

13. महात्मा गाँधी और सत्याग्रह 112
–संदीप कुमार आदित्य

14. गाँधीवादी विचारधारा : आधुनिक विश्व व्यवस्था के लिए एक महती आवश्यकता और उसकी प्रासंगिकता 124
–डॉ. डी. आर. शर्मा

15. गाँधी जी के चिंतन में शैक्षिक उद्देश्यों की अवधारणा 138
–डॉ. धीरज सिंह

16. गाँधी जी का आर्थिक दर्शन 150
–डॉ. महेन्द्र त्रिपाठी

17. गाँधीः नैतिकता और मशीन 159
–भारत मौर्य

18. मोहनदास करमचंद गाँधी की पत्रकारिता : एक समीक्षा 166
–डॉ. पुनीत कुमार

SAMPLE

19. महिला उत्थान में गांधी जी का योगदान 174
—डॉ. मनीषा सिंह

20. राष्ट्रभाषा हिंदी और गांधीजी की प्रासंगिकता 179
—डॉ. दिग्विजय शर्मा

21. सत्य ही ईश्वर है – महात्मा गांधी 190
—दीपिका रावत

22. महात्मा गाँधी और खादी आन्दोलन 202
—डॉ. नुज़हत फ़ात्मा

23. महात्मा गांधी की राजनीतिक दृष्टि 210
—डॉ. राजीव दूबे

24. गाँधी दर्शन व्यक्तिवाद एवं समाजवाद का समन्वयक 225
—डॉ. ऋचा शुक्ला, डॉ. वन्दना शर्मा

25. गाँधी के सिद्धांत और आधुनिक युग 230
—डॉ. प्रज्ञा मिश्रा

26. गाँधी जी के नेतृत्व में चलाये गये आन्दोलन 240
—डॉ. हेमाराम

27. अहिंसावादी चिन्तक के रूप में महात्मा गाँधी जी के विचारों की प्रासंगिकता : एक अध्ययन 249
—डॉ. शिखा जैन

28. महात्मा गांधी और साम्प्रदायिकता 256
—डॉ. पवन कुमार शर्मा

29. गाँधी जी के धर्म एवं राजनीति सम्बन्धी विचारों का एक विश्लेषण 264
—डॉ. रीना

30. व्यक्तित्व का टकरावः गाँधी और अम्बेडकर 271
—डॉ. घनश्याम कुशवाहा

SAMPLE

31. अस्पृश्यता और महात्मा गाँधी 279
—डॉ. रश्मि नायक

32. गांधी टोपी : एक विमर्श 284
—डॉ. मीनाक्षी शर्मा

33. गांधी और भारत छोड़ो आंदोलन 290
—डॉ. गौरव त्रिपाठी, डॉ. मीनाक्षी शर्मा

नमूना • SAMPLE

1

egkRek xka/kh % lf{kIr ifjp;

महात्मा गांधी एक स्वतंत्रता सेनानी, राजनीतिज्ञ, समाज सुधारक और महान व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति थे। भारत वर्ष का प्रत्येक व्यक्ति महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित था और प्रभावित है। उनके विचारों और उनके द्वारा किए गए भारत के लिए आन्दोलन को कभी भुलाया नहीं जा सकता है। उन्होंने अपना पूरा जीवन भारत के लोगों को समर्पित कर दिया था। इसी समर्पण की भावना के कारण उन्होंने भारत के लोगों के हितों के लिए अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ कई आंदोलन किए थे। उनके द्वारा किए गए आन्दोलनों के माध्यम से ही हमें स्वतन्त्रता प्राप्त करने में बहुत अधिक सहायता मिली है। उनके द्वारा किया गया 'भारत छोड़ो आंदोलन' अंग्रेजी सरकार के ताबूत में आखिरी कील साबित हुआ था। गांधी जी के इन्हीं आदर्शों, भावनाओं एवं विचारों के कारण भारत में उन्हें राष्ट्रपिता और बापू के नाम से पुकारा जाता है।

cpiu vkj f'k{kk

महात्मा गांधी का जन्म एक साधारण परिवार में 2 अक्टूबर 1869 ई0 को पोरबंदर शहर में हुआ था। उनके पिताजी करमचंद गांधी अंग्रेजी हुकूमत के दीवान के रूप में काम करते थे। उनकी माताजी पुतलीबाई गृहणी थीं, वह भक्ति भाव वाली महिला थीं, जिनका पूरा दिन लोगों की भलाई करने में बीतता था। उनका जीवन मानो व्रत और उपवासों का एक अंतहीन सिलसिला ही था और अपनी इसी आस्था के बल पर उन्होंने अपने बेहद कमजोर शरीर को टिका रखा था। घर में जब भी कोई बीमार पड़ता तो वह उसकी सेवा में दिन रात एक कर देती थीं। पढ़ी–लिखी तो कुछ खास नहीं

थीं पर धर्म सम्बन्धी सारा ज्ञान उन्होंने कथा–वार्ता एवं सत्संगों से प्राप्त किया था। दूसरे बच्चों की अपेक्षा मोहनदास (मोहनिया) माँ से ज्यादा घुला मिला था और स्नेह के उस दृढ़ बंधन को वह जीवन भर अनुभव करता रहा। 1908 में जब गांधी जी, 39 वर्ष के थे, एक लेखक ने लिखा है, ''जब वह अपनी माता के विषय में बात करते हैं तो उनकी आवाज कोमल हो जाती है और आँखें प्रेम से आलोकित हो उठती हैं।'' जिसका असर हमें गांधी जी के जीवन पर भी देखने को मिलता है।

महात्मा गांधी जी का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। महात्मा गांधी की प्रारम्भिक पढ़ाई गुजरात में ही हुई थी। गांधी जी न तो पढ़ाई में तेज थे और न ही खेल में। स्वभाव से ही शांत, झेंपू और एकांतप्रिय थे। बचपन में उनके मुँह से लोगों के सामने बोल तक नहीं फूटता था। औसत दर्जे का विद्यार्थी समझे जाने की उन्हें जरा भी फिक्र न थी, परन्तु अपनी प्रतिष्ठा के मामले में वो बहुत ही सतर्क थे। उन्हें इस बात का गर्व था कि अपने शिक्षकों और सहपाठियों से वह कभी भी झूठ नहीं बोलते थे। उनकी नीयत पर कोई जरा भी शक करता तो उन्हें रोना आ जाता था या वे परेशान हो जाते थे। ऐसा ही एक वाक्या उनके साथ घटित हुआ, जब उनके पिता जी की तबियत खराब हुई थी। शनिवार को खेल के घण्टे में अनुपस्थित होने पर प्रधानाध्यापक ने पूछा कि, ''तुम खेल के घण्टे से गायब क्यों थे?'' तब गांधी जी ने जवाब दिया कि, ''सर, मैं अपने पिता जी की तीमारदारी कर रहा था। मेरे पास घड़ी नहीं है, बादलों के कारण धोखा हुआ और समय का सही अंदाजा न लगा सका। जब मैं पहुँचा तो सब लड़के जा चुके थे।'' प्रधानाध्यापक ने रुखाई से कहा, ''झूठ बोल रहे हो?'' यह सुनकर गांधी जी परेशान हो गए और सोचने लगे प्रधानाध्यापक को कैसे विश्वास दिलाए। काफी देर सोचने के बाद इस नतीजे पर पहुँचे कि ''सच बोलने वाले को चौकस भी होना चाहिए।'' बस, तय कर लिया कि आगे से ऐसा मौका ही नहीं आने देंगे, जिससे उनकी किसी कैफियत को झूठा समझा जाए।

उनका विवाह 13 साल की छोटी सी उम्र में ही कर दिया गया था। उनकी पत्नी का नाम कस्तूरबा था, जिन्हें प्यार से लोग ''बा'' के नाम से पुकारते थे। उस समय बाल विवाह प्रचलन में था, इसलिए गांधी जी का विवाह बचपन में ही कर दिया गया था। उनके बड़े भाई ने उनको पढ़ने के

लिए इंग्लैंड भेज दिया था। 18 वर्ष की छोटी सी आयु में 4 सितम्बर 1888 को गांधी बैरिस्टर की पढ़ाई करने इंग्लैण्ड चले गए। 1891 में महात्मा गांधी जी इंग्लैंड से बैरिस्टरी पास करके स्वदेश लौट आए और मुम्बई में वकालत प्रारंभ कर दी। प्रैक्टिस बढ़ाने का आजूबा ढंग था दलालों को कमीशन देकर मुकदमा पाना, लेकिन गांधी जी इसे अपने पेशे की शान के खिलाफ और अपमानजनक मानते थे। इसलिए वकालत के पेशे में इन्हें इच्छानुरूप सफलता नहीं मिली।

vfgalkokn h thou

महात्मा गांधी के जीवन में एक अनोखी घटना घटने के कारण उन्होंने अहिंसावादी जीवन जीने का प्रण ले लिया था। दक्षिण अफ्रीका में प्रवास के दौरान महात्मा गांधी ने 1899 के एंग्लो बोअर युद्ध के समय स्वास्थ्य कर्मी के तौर पर मदद की थी लेकिन इस युद्ध की विभीषिका को देखकर अहिंसा के रास्ते पर चलने का कदम उठाया था। उन्होंने कई आंदोलन अनशन के बल पर किए थे, जो कि अंत में सफल हुए थे। उन्होंने ऐसे ही दक्षिण अफ्रीका के जोल विद्रोह के समय एक सैनिक की मदद की थी, जिसे लेकर वे 33 किलोमीटर तक पैदल चले थे और उस सैनिक की जान बचाई थी। इससे प्रतीत होता है कि महात्मा गांधी के जीवन के प्रारंभ से ही रग–रग में मानवता और करुणा की भावना भरी हुई थी।

''अहिंसा परमो धर्म''

jktuhfrd thou

दक्षिण अफ्रीका में जब गांधी जी वकालत की पढ़ाई कर रहे थे उसी दौरान उन्हें काले गोरे का भेदभाव झेलना पड़ा। वहाँ पर हमेशा भारतीय एवं काले लोगों को नीचा दिखाया जाता था। एक दिन की बात है उनके पास ट्रेन की फर्स्ट ए.सी. की टिकट थी, लेकिन उन्हें ट्रेन से धक्के मारकर बाहर निकाल दिया गया और उन्हें मजबूरी में तृतीय श्रेणी के डिब्बे में यात्रा करनी पड़ी। यहाँ तक कि उनके लिए अफ्रीका के कई होटलों में उनका प्रवेश वर्जित कर दिया गया था। यह सब बातें गांधी जी के दिल को कचोट गई थी। इसलिए उन्होंने राजनीतिक कार्यकर्ता बनने का निर्णय लिया ताकि वे भारतीयों के साथ हो रहे भेदभाव को मिटा सकें।

Hkkjr e egkRek xk/kh th d vkUnkyu

pEikj.k vkUnkyu

महात्मा गांधी जी का भारत में प्रथम आंदोलन अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ था, क्योंकि अंग्रेजों ने किसानों से खाद्य फसल की पैदावार कम करने और नील की खेती बढ़ाने पर जोर दे रहे थे और एक तय कीमत पर अंग्रेज किसानों से नील की फसल खरीदना चाहते थे। इसके विरोध में महात्मा गांधी जी ने अंग्रेजों के खिलाफ वर्ष 1917 में चम्पारण नाम के गांव में आंदोलन छेड़ दिया था। अंग्रेजों की लाख कोशिशों के बाद भी गांधीजी मानने को तैयार नहीं थे। अंत में अंग्रेजों को गांधी जी की सभी बातें माननी पड़ी। बाद में इस आन्दोलन को चम्पारण आन्दोलन के नाम से जाना गया। इस आन्दोलन की सफलता से गांधी जी में और विश्वास पैदा हुआ और उन्होंने जान लिया था कि अहिंसा से ही वे अंग्रेजों को भारत से बाहर खदेड़ सकते हैं।

[kMk lR;kxg

खेड़ा आंदोलन में महात्मा गांधी ने किसानों की स्थिति में सुधार लाने के लिए ही किया था। वर्ष 1918 में गुजरात के खेड़ा नाम के गांव में भयंकर बाढ़ आई थी, जिसके कारण किसानों की सारी फसलें बर्बाद हो गई थीं और वहाँ पर भयंकर अकाल की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। इतना सब कुछ होने के बाद भी अंग्रेजी हुकूमत के अफसर करो में छूट नहीं करना चाहते थे। वह किसानों से फसल बर्बाद होने के बाद भी कर वसूलना चाहते थे, लेकिन किसानों के पास उन्हें देने के लिए कुछ नहीं था तो किसानों ने यह बात गांधी जी को बताई। गांधी जी अंग्रेजी हुकूमत के इस बर्बरता पूर्वक निर्णय से काफी दुखी हुए, फिर उन्होंने खेड़ा गांव से ही अंग्रेजों के खिलाफ अहिंसा पूर्वक आंदोलन छेड़ दिया। महात्मा गांधी के साथ आंदोलन में सभी किसानों ने हिस्सा लिया, जिसके कारण अंग्रेजी हुकूमत के हाथ पांव फूल गए और उन्होंने खेड़ा के किसानों का कर माफ कर दिया। इस आंदोलन को खेड़ा सत्याग्रह के नाम से जाना गया।

vlg;kx vkanksyu

अंग्रेजी हुकूमत के भारतीयों पर बर्बरता पूर्ण जुल्म करने और जलियांवाला बाग हत्याकांड के बाद महात्मा गांधी जी को समझ में आ गया था कि अगर जल्द ही अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ कुछ नहीं किया गया तो यह लोग भारतीय लोगों को अपनी क्रूर नीतियों से हमेशा चूसते रहेंगे। महात्मा गांधी जी पर जलियांवाला बाग हत्याकांड का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा था, जिसके बाद 1 अगस्त 1920 को महात्मा गांधी ने अंग्रेजों के खिलाफ असहयोग आंदोलन की शुरुआत कर दी। इस आंदोलन के अन्तर्गत गांधी जी ने सभी देशवासियों से निवेदन किया कि वे विदेशी वस्तुओं का उपयोग बंद कर दें और स्वदेशी वस्तुएं अपनाएं। इस बात का लोगों पर इतना असर हुआ कि जो लोग ब्रिटिश हुकूमत के अंदर काम करते थे, उन्होंने अपने पदों से इस्तीफा देना चालू कर दिया था। सभी लोग अंग्रेजी वस्तुओं का बहिष्कार करते हुए स्वदेशी सूती वस्त्र पहनने लगे थे। इस आंदोलन के कारण ब्रिटिश हुकूमत के पैर उखड़ने लगे थे, लेकिन आंदोलन ने बड़ा रूप ले लिया था और चौरी–चौरा जैसे बड़े काण्ड होने लगे थे, जगह–जगह लूटपाट हो रही थी। गांधी जी का अहिंसा पूर्ण आंदोलन हिंसा का रुख अपना रहा था। इसलिए गांधी जी ने असहयोग आंदोलन को वापस ले लिया। इस आंदोलन के कारण उन्हें 6 वर्ष की जेल की सजा भी हुई थी।

ued lR;kxg

ब्रिटिश हुकूमत की क्रूरता दिन प्रतिदिन भारतीयों पर बढ़ती ही जा रही थी। ब्रिटिश हुकूमत ने नया कानून पास करके नमक पर अधिक कर लगा दिया था, जिसके कारण आम लोगों को बहुत अधिक परेशानी हो रही थी। नमक पर अत्याधिक कर लगाए जाने के कारण महात्मा गांधी जी ने 12 मार्च 1930 को अहमदाबाद के साबरमती आश्रम से नमक पर भारी कर लगाए जाने के विरोध में दाण्डी यात्रा प्रारंभ की, जो कि 6 अप्रैल 1930 को गुजरात के दाण्डी नामक गांव में समाप्त हुई। इस यात्रा में गांधी जी के साथ हजारों लोगों ने हिस्सा लिया था। दाण्डी गांव पहुंचकर गांधी जी ने ब्रिटिश हुकूमत के कानून की अवहेलना करते हुए खुद नमक का उत्पादन किया और लोगों

को भी स्वयं नमक के उत्पादन करने के लिए प्रोत्साहित किया। इस आंदोलन की खबर देश–विदेश में आग की तरह फैल गई थी, जिसके कारण विदेशी देशों का भी ध्यान इस आंदोलन की तरफ आ गया था। यह आंदोलन गांधी जी की तरफ से अहिंसा पूर्वक लड़ा गया था, जो कि पूर्णतः सफल रहा। इस आंदोलन को नमक सत्याग्रह और दाण्डी यात्रा के नाम से जाना जाता है। नमक आंदोलन के कारण ब्रिटिश हुकूमत विचलित हो गई थी और उन्होंने इस आंदोलन में सम्मिलित होने वाले लोगों में से लगभग 80000 लोगों को जेल भेज दिया था।

Hkkjr NkMk vkUnksyu

महात्मा गांधी जी ने ब्रिटिश हुकूमत को भारत से जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए 8 अगस्त 1942 को भारत छोड़ो आंदोलन प्रारंभ किया। इस आंदालेन की नींव उसी दिन पक्की हो गई थी जिस दिन गांधी जी ने नमक आंदोलन सफलतापूवर्क किया था। उन्हें विश्वास हो गया था कि अग्रेंजों को अगर भारत से बाहर करना है तो उसके लिए अहिंसा का रास्ता ही सबसे उत्तम रास्ता है। महात्मा गांधी ने यह आंदोलन तब छेड़ा जब द्वितीय विश्वयुद्ध चल रहा था और ब्रिटिश हुकूमत अन्य देशों के साथ युद्ध लड़ने में लगी हुई थी। द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण अंग्रेजों की हालत दिन प्रतिदिन खराब होती जा रही थी। उन्होंने भारतीय लोगों को इस विश्वयुद्ध में शामिल करने का निर्णय लिया, लेकिन भारतीय लोगों ने उन्हें नित्य विश्वयुद्ध से अलग रखने पर जोर दिया। बाद में ब्रिटिश हुकूमत के वादा करने पर भारतीय लोगों ने द्वितीय विश्वयुद्ध में अंग्रेजों का साथ दिया। ब्रिटिश हुकूमत ने वादा किया था कि वे द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद भारत को स्वतन्त्र कर देंगे। यह सब कुछ भारत छोड़ो आंदोलन के प्रभाव के कारण ही हो पाया और वर्ष 1947 में भारत को ब्रिटिश हुकूमत से आजादी मिल गई। महात्मा गांधी का भारत छोड़ो आंदोलन पूर्ण रूप से सफल रहा। इसकी सफलता का श्रेय सभी देशवासियों को भी जाता है, क्योंकि उन्हीं की एकजुटता के कारण इस आंदोलन में किसी भी प्रकार की हिंसा नहीं हुई और अंत में सफलता प्राप्त हुई।

महात्मा गांधी जी बहुत ही सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। वे हमेशा सत्य और अहिंसा में विश्वास रखते थे। उन्होंने हमेशा गरीब लोगों का साथ दिया

था। जब देश में जाति, धर्म और अमीर गरीब के नाम पर लोगों को बांटा जा रहा था तब गांधी जी ने ही गरीबों को साथ लेते हुए उन्हें ''हरिजन'' नाम दिया जिसका मतलब भगवान के लोग होता है। उनके जीवन पर भगवान बुद्ध के विचारों का बहुत प्रभाव था। इसी कारण उन्होंने अहिंसा का रास्ता बनाया था। उनका पूरा जीवन संघर्षों से भरा हुआ था, लेकिन अंत में उन्हें सफलता प्राप्त हुई थी। उन्होंने भारत देश के लिए जो किया है उसके लिए धन्यवाद शब्द बहुत कम है। हमें उनके विचारों से सीख लेनी चाहिए। आज लोग एक दूसरे से छोटी–छोटी बात पर झगड़ा करने लगते हैं और हर एक छोटी सी बात पर लाठी और बन्दूकें चलाने लगते हैं। गांधी जी ने कहा था कि जो लोग हिंसा करते हैं, वे हमेशा नफरत और गुस्सा दिलाने की कोशिश करते हैं। गांधी जी के अनुसार अगर शत्रु पर विजय प्राप्त करनी है तो हम अहिंसा का मार्ग भी अपना सकते हैं, जिसको अपनाकर गांधी जी ने हमें ब्रिटिश हुकूमत से आजादी दिलवाई थी। ये हमारा दुर्भाग्य ही है कि 30 जनवरी 1948 को हमारे देश के ही नागरिक नाथूराम गोडसे ने गोली मारकर उनकी हत्या कर दी थी, जब वो नई दिल्ली के बिरला हाउस में रात में चहलकदमी कर रहे थे। नई दिल्ली के राजघाट में इनका समाधि स्थल बनाया गया है।

''हे राम''

InHk xUFk

1. नन्दा, बी.आर.; महात्मा गांधी : एक जीवनी, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. एटनवरो, रिचर्ड; महात्मा गांधी– द वडर्स ऑफ गांधी।
3. सैनी, रेनू; महात्मा गांधी की प्रेरक गाथाएँ, प्रभात प्रकाशन।
4. गांधी, महात्मा; सत्य के साथ मेरे प्रयोग, प्रभात प्रकाशन।
5. www.wikipedia.com
6. गांधी, महात्मा; हिन्द स्वराज, डायमण्ड पॉकेट बुक्स।